श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्रीकोलद्वीप

वर्तमान समय में इस स्थान को 'कुलिया' कहते हैं। यह 'पादसेवन - भक्ति' का स्थान है।

इस स्थान पर सत्ययुग में वासुदेव नाम के एक ब्राह्मण ने श्रीवराहदेव जी की आराधना की थी। आराधना के समय ब्राह्मण के भगवान के लिए व्याकुल होने पर भगवान ने श्रीवराहरूप से उन्हें दर्शन दिये थे। कलिकाल में श्रीगौरांग रूप से श्रीनवद्वीप में फिर मेरा दर्शन पाओगे, इस प्रकार कहकर वराह भगवान

अन्तर्धान हो गए। श्रीभगवान यहाँ 'कोल' अर्थात् वराहमूर्ति से आविर्भूत हुए थे, इसलिये इस स्थान का नाम "कोलद्वीप' 'श्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य' के ग्यारहवें अध्याय में वर्णित है हुआ है।

"नित्यानन्दप्रभु बले शुन सर्वजन।
पन्चवेणी रूपे गंगा हेथाय मिलन ।।

मन्दाकिनी अलका सहित भागीरथी ।
गुप्तभावे हेथाय आछेन सरस्वती ।।

पश्चिमे यमुनासह आइसे भोगवती।
ताहाते मानसगंगा महा वेगवती ।।

महा महा प्रयाग बलिया ऋषिगणे।
कोटि-कोटि यज्ञ हेथा कैल बह्मासने ।।

ब्रह्मसत्र स्थान एइ महिमा अपार ।
हेथा स्नान करिले जनम नहे आर।।

इहार महिमा केवा वर्णिवारे पारे ।"
शुष्क - धारासम कोन तीर्थ हइते नारे ।।

जले - स्थले-अन्तरीक्षे त्यजिया जीवन।
सर्वजीव पाय श्रीगोलोक - वृन्दावन ।।

'कुलियापाहाड़' बलि ख्यात एइ स्थान ।
गंगातीरे उच्च भूमि पर्वत समान ।।

कोलद्वीप नाम शास्त्रे आछय वर्णन।
सत्ययुग कथा एक शुन सर्वजन ।।

वासुदेव नामे एक ब्राह्मणकुमार ।
वराहदेवेर सेवा करे बार बार ।।

श्रीवराहमूर्ति पूजि' करे उपासना ।
सर्वदा वराहदेवे करय प्रार्थना ।।

प्रभु मोरे कृपा करि देह दरशन।
सफल हउक मोर नयन जीवन ।।

'एइ बलि' कांदे विप्र गड़ागड़ि याय ।
प्रभु नाहि देखा दिले जीवन वृथाय ।।

कतदिते श्रीवराह अनुकंपा करि ।
देखा दिला वासुदेवे कोलरूप धरि ।।

नानारत्न भूषणे भूषित कलेवर।
पद - ग्रीवा - नासा - मुख-चक्षु मनोहर ।।

पर्वत समान उच्च शरीर ताँहार ।
देखि' विप्र निजे धन्य माने बार बार ।।

भूमि पड़ि' विप्र प्रणमिया प्रभु - पाय ।
कांदिया आकुल हैल गड़ागड़ी याय ।।

विप्रेर भकति देखि' वराह तखन ।
कहिलेन वासुदेवे मधुर वचन ।।

ओहे वासुदेव! तुमि, भकत आमार ।
बड़ तुष्ट हइनु पूजा पाइया तोमार ।।

एइ नवद्वीपे मोर प्रकट विहार ।
कलि आगमने हबे शुन वाक्य सार ।।

नवद्वीप - सम धाम नाहिं त्रिभुवने।
अतिप्रिय धाम मोर आछे संगोपने।।

बह्मावर्त - सह आछे - सह आछे पुण्य
तीर्थ यत ।
से - सब आछये हेथा शास्त्रेर सम्मत।।

येस्थाने ब्रह्मार यज्ञे प्रकाश हइया ।
नाशिलाम हिरण्याक्ष दन्ते विदारिया।।

सेइ स्थान पुण्यभूमि एइ स्थाने रय ।
यथाय आमार एबे हइल उदय ।।

नवद्वीप सेवि' सर्वतीर्थ विराजय ।
नवद्वीप वासे सर्वतीर्थ वास हय ।।

धन्य तुमि नवद्वीपे सेविले आमाय ।
श्रीगौरप्रकटकाले जन्मिबे हेथाय ॥

अनायासे देखिबे से महासंकीर्तन |
अपूर्व गौरांग रूपे पाबे दरशन ॥

एतबलि' श्रीवराह हैल अन्तर्धान ।
दैववाणी हैल विप्रे बुझिते सन्धान ॥

परम पण्डित वासुदेव महाशय ।
सर्वशास्त्र विचारिया जानिल निश्चय ॥

वैवस्वत - मन्वन्तरे कलिर सन्ध्याय
श्रीगौरांग प्रभु - लीला हबे नदीयाय ॥

-

परम आनन्दे विप्र करे संकीर्तन।
गौरनाम गाय मने मने सर्वक्षण ॥

पर्वतप्रमाण कोलदेवेर शरीर ।
देखि' वासुदेव मने विचारिल धीर ॥

कोलद्वीप पर्वताव्य एइ स्थान हय।
सेइ हइते पर्वताव्य हइल परिचय ।।"

भावानुवाद — भक्तों को सम्बोधित करते हुए श्रीनित्यानन्द प्रभु जी ने कहा भक्तों को सम्बोधित करते हुए श्रीनित्यानन्द पाँच - धाराओं के रूप से गंगा जी का यहाँ मिलन है। यहाँ पर गंगा जी के इलावा मन्दाकिनी, अलका, भागीरथी एवं गुप्तभाव से यहाँ सरस्वती हैं। पश्चिम में यमुना सहित भोगवती आयी है। इस कारण मानस गंगा यहाँ महावेगवती है। ऋषि लोग इस स्थान को महा - महा - प्रयाग कहते हैं। ब्रह्मा जी ने यहाँ कई करोड़ यज्ञ किये थे। यह 'ब्रह्मसत्र' स्थान है। इसकी महिमा अपार है।

यहाँ स्नान करने से पुनर्जन्म नहीं होता है। यहाँ जल पर, स्थल पर व आकाश में जीवन त्यागने से सब जीव श्रीगोलोक - वृन्दावन को प्राप्त होते हैं। गंगा जी के किनारे पर्वत के समान जो ऊँची भूमि है, वह 'कुलिया पहाड़' नाम से प्रसिद्ध है तथा 'कोलद्वीप' नाम से शास्त्र में इसका वर्णन है।

सत्ययुग की एक कथा है कि वासुदेव नाम का एक ब्राह्मण बालक था। वह हर समय श्रीवराहवदेव जी की सेवा करता था तथा सर्वदा श्रीवराहदेवजी के पास प्रार्थना करता था हे प्रभो ! मुझे कृपा करके दर्शन दो ताकि आपका दर्शन पाकर मेरे

नयन व मेरा जीवन सफल हो। इस प्रकार विप्र - बालक रो-रोकर भूमि पर लोट-पोट होता था। वह प्रभु के दर्शन बिना अपना जीवन वृथा समझता था। कुछ दिन बाद श्रीवराहदेव ने अनुकम्पा करके कोलरूप से अर्थात् वराह रूप से वासुदेव नामक उस ब्राह्मण- बालक को दर्शन दिया था। भगवान वराहदेव जब उस ब्राह्मण-बालक के पास आये तो तब उनका कलेवर नाना प्रकार के रत्न - आभूषणों से भूषित था। उनके चरण, गर्दन, नासिका, मुख तथा नेत्र सभी मनोहर थे । पर्वत के समान उनका विशाल पर्वताकार शरीर था । प्रभु को देखकर विप्र- बालक अपने को बार-

बार धन्य मानने लगा। विप्र- बालक ने भूमि पर पड़कर प्रभु के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया और रोते-रोते आकुल होकर भूमि पर लोटपोट होने लगा। विप्र - बालक की भक्ति देखकर श्रीवराहदेव बड़े मधुर वचनों में उससे बोले हे विप्र- बालक वासुदेव ! तुम मेरे भक्त हो । तुम्हारी पूजा से मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ हूँ। इसलिए मैं तुम्हें बड़ी महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हूँ, वह ये कि कलियुग के प्रारम्भ होने पर मैं गौरांग रूप से प्रकट होऊँगा तथा यह नवद्वीप ही मेरा प्रकट विहार-स्थल होगा। त्रिभुवन में नवद्वीप के समान मेरा धाम नहीं है। यह मेरा अति प्रिय धाम है तथा अभी तक यह पूरी तरह

से गोपनीय है। ब्रह्मावर्त सहित जितने पुण्य तीर्थ हैं, सब यहाँ हैं, ऐसा शास्त्रों का भी मत है। जिस स्थान पर ब्रह्मा जी के यज्ञ से प्रकाशित होकर मैंने दांतों के द्वारा हिरण्याक्ष का नाश किया था, वह पुण्यभूमि इसी स्थान पर ही है। नवद्वीप की सेवा के लिये सब तीर्थ यहाँ विराजमान हैं। नवद्वीप वास से, सब तीर्थों में वास होता है। तुम धन्य हो जो तुमने नवद्वीप में मेरी सेवा की है। मेरी गौरांग लीला के समय तुम्हारा भी यहाँ जन्म होगा, तब अनायास से तुम मेरे व मेरे भक्तों के महासंकीर्तन को देखोगे एवं मेरे अपूर्व श्रीगौरांग रूप का दर्शन करोगे। इतना कहकर श्रीवराहदेव अन्तर्धान हो गये।

ब्राह्मण बालक जब कुछ बड़े हुए तो वे वासुदेव पण्डित रूप से प्रसिद्ध हुए। वे नित्य प्रति श्रीगौरांग - श्रीगौरांग नाम उच्चारण करते रहते थे। एक दिन उन्हें दैववाणी सुनाई दी कि विप्र ! तुम गौरांग महाप्रभु जी के प्रकट काल पर विचार करो। वासुदेव महाशय परम पण्डित थे। सब शास्त्रों का विचार करके यह निष्कर्ष निकाला कि वैवस्वत मन्वन्तर के समय, कलियुग की प्रथम-संध्या में श्रीगौरांग प्रभु जी नदीया में प्रकट होकर लीला करेंगे।

परम आनन्द से विप्र वासुदेव अपने प्रभु वराहदेव जी का संकीर्तन

करता रहता और मन- मन में हमेशा 'श्रीगौर' नाम गान करता था। पर्वतसमान श्रीकोलदेव का दिव्य शरीर था, इसे विप्र कभी न भुला पाता था। विप्र वासुदेव ने मन- मन में विचार किया कि विशालकाय कोल - अवतार अर्थात् भगवान के वराह अवतार की तरह यह 'कोलद्वीप' भी पर्वत की तरह है। इसीलिए इसे कोलद्वीप कहते हैं। -

(क) **पोड़ामा तला** — गंगा के पश्चिम की तरफ श्रीकोलद्वीप है। नवद्वीप शहर श्रीकोलद्वीप के अन्तर्गत है। इस शहर का प्रधान आकर्षणीय स्थान 'पोड़ामा तला' है। पोड़ामा का

वास्तव नाम 'प्रौढ़ा माया' है। ये व्रज की पौर्णमासी योगमाया हैं। ये श्रीगौरलीला में क्षेत्रपाल सहित श्रीनवद्वीप धाम में रहती हैं। इसी स्थान के निकट एक शिव मन्दिर भी है। इस मन्दिर में वृद्ध शिव विराजमान हैं।

(ख) **श्रीचैतन्य साररस्वत मठ** — इस मठ को परम पूज्यपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिरक्षक श्रीधरदेव गोस्वामी महाराज ने स्थापित किया है। यह मठ, नवद्वीप शहर के कोलेरगंज में अवस्थित है। मठ के विशाल मन्दिर में श्रीगुरु - गौरांग -

राधा - गोविन्द जी, विग्रह रूप से विराजमान हैं।

(ग) **श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ** — इस मठ को परम पूज्यपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज ने स्थापित किया था। यह मठ, नवद्वीप शहर के तेघड़ी पाड़ा में अवस्थित है। श्रीमन्महाप्रभु के पार्षद श्रीदेवानन्द जी की श्रीमद् भागवत पाठशाला पर ही यह मठ स्थापित हुआ है। मठ के विशाल मन्दिर में श्रीगुरु गौरांग राधाविनोद विहारी जी एवं श्रीकोलदेव (श्रीवराहदेव) जी के विग्रह) विराजमान हैं।

(घ) **श्रीसारस्वत गौड़ीय आसन** — इस मठ को परम पूज्यपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिश्रीरूप सिद्धान्ति महाराज ने स्थापित किया था। यह मठ, राधा बाज़ार, नवद्वीप में अवस्थित है। श्रीमन्दिर में श्रीगुरु - गौरांग - राधाकृष्ण जी, विग्रह के रूप में विराजमान हैं। मठ के द्वार पर एवं आंगन में सुन्दर सुन्दर मूर्तियाँ बनाई हुई हैं।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव